Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **सिंधु घाटी सभ्यता के शिल्प एवं उद्योग ।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

सिंधु घाटी सभ्यता के शिल्प एवं उद्योग ।

कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त सैधव निवासी शिल्पों एवं उद्योग धन्धों में भी रुचि लेते थे। विविध प्रकार के उद्योग-धन्धो का प्रचलन था।खुदाई में प्राप्त कताई-बुनाई के उपकरणो (तकली, सुई आदि) से पता चलता है कि कपड़ा बुनना एक महत्वपूर्ण उद्योग था। मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुरोहित की प्रस्तर मूर्तियों तिपातिया अलंकरण युक्त शाल ओढ़े हुए है। इससे स्पष्ट होता है कि सिन्धु सभ्यता में वस्त्रों पर कढ़ाई का काम भी होता था ।सिन्धु प्रदेश में पटुए के अवशेष मिलते हैं। शाल तथा धोती यहाँ के निवासियों के प्रमुख वस्त्र थे जिनका निर्माण यहाँ के कारीगरों द्वारा किया जाता था।मोहनजोदड़ों से मजीठा से लाल रंग में रंगे हुये कपड़े के अवशेष चांदी के बर्तन में पाये गये थे। रंगे हुए बर्तनों से पता चलता है कि सैधव लोग रंगाई करने के काम से परिचित थे चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना,पकी ईटों, खिलौने बनाना, मुद्राओं का निर्माण करना, आभूषण एवं गुरियों का निर्माण करना आदि कुछ अन्य प्रमुख उद्योग-धन्धे थे। धातुओं में सोना, चौंदी, ताँबा कांसा तथा सीसा का ज्ञान उन्हें था और इनसे

विविध प्रकार के उपकरण एवं आभूषण बनाये जाते थे। खुदाई से तांबे-कासे के उपकरण अधिक मात्रा मे उपलब्ध होते हैं। इस समय तांबे में टिन मिलाकर कांसा तैयार किया जाता था। तांबा राजस्थान के खेतड़ी से, टिन अफगानिस्तान से मंगाया जाता था। तांबे तथा कांसे का प्रयोग मानव एवं पशु मूर्तियाँ बनाने में भी किया जाता था।सम्भवतःकांस्य शिल्पियों का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान था । खुदाई मे घरेलू तथा कृषि-संबंधी उपकरण, अस्त्र-शस्त्र, बर्तन,कड़ाही, प्रसाधन सामग्रियां आदि प्रमुखता से मिलती है।कांस्य शिल्पियों के अतिरिक्त आभूषण निर्माताओं का समुदाय भी सक्रिय था।चाँदी के न केवल सुंदर आभूषण अपितु बर्तन भी बनाये जाते थे । किन्तु सोने का कोई भी बर्तन प्राप्त नही होते है।इस समय बनने वाले सोने, चांदी के आभूषणों के लिए सोना, चांदी सम्भवतः अफगानिस्तान से एवं रत्न दक्षिण भारत से मंगाया जाता था। इसी प्रकार सीसे के भी कुछ उपकरण मिलते है। धातुओं को गलाने, उन्हे पीटने तथा उन पर पानी एवं परत चढ़ाने की विधि से लोग अच्छी तरह परिचित थे। शंख, सीप, घोन्घा, हाथी-दाँत से भी उपकरणों का निर्माण करना वे जानते थे । बालाकोट तथा

लोथल कर सीप उद्योग(Snell-industry) सुविकसित था। लकड़ी की वस्तुओं से पता चलता है कि बढ़ईगिरी का व्यवसाय भी होता था। गाड़ी के पहियों तथा तख्तों के कई अवशेष मिलते हैं। सैन्धव भवन पकी ईटों के बने है। इससे सूचित होता है कि ईट उद्योग भी काफी विकसित अवस्था में था त्तथा कुछ लोग राजगीरी के व्यवसाय में भी निपुण थे। यहाँ के निवासी नावो का निर्माण करना भी जानते थे। सैंघव निवासियों ने विभिन्न उद्योग-धन्धों में निपुणता प्राप्त कर ली थी। उनके कुछ आभूषण एवं बर्तन, कला एवं तकनीक की दृष्टि से अत्यन्त उच्चकोटि के थे।

References: Internet & Competitive books.